अध्याय 1

होमबलियाँ

निर्गमन का अन्त निवास-स्थान के स्थापित किए जाने और परमेश्वर द्वारा उसे आशीषित किए जाने के साथ, जो "यहोवा का तेज निवास-स्थान में भर गया" (निर्गमन 40:34) के द्वारा प्रमाणित होने से, होता है। फिर लैव्यव्यवस्था का आरंभ उन बलियों के साथ होता है जो आराधक वहाँ पर चढ़ाएंगे।

लैव्यव्यवस्था के पहले साथ अध्यायों में निवास-स्थान में चढ़ाई जाने वाली पाँच[1] प्रकार की बलियों से संबंधित नियमों के विवरण हैं: होमबलियाँ (1:1-17; 6:8-13), अन्नबलियाँ (2:1-16; 6:14-23), मेलबलियाँ (3:1-17; 7:11-36), पापबलियाँ (4:1-5:13; 6:24-30), दोषबलियाँ (5:14-6:7; 7:1-7)।[2] यह बात कि पुस्तक का यह खण्ड एक इकाई समझा जाना था इसकी अंतिम पद से प्रकट है:

> होमबलि, अन्नबलि, पापबलि, दोषबलि, याजकों के संस्कार बलि, और मेलबलि की व्यवस्था यही है; जब यहोवा ने सीनै पर्वत के पास के जंगल में मूसा को आज्ञा दी कि इस्राएली मेरे लिये क्या क्या चढ़ावे चढ़ाएं, तब उसने उन को यही व्यवस्था दी थी (लैव्य. 7:37, 38)।

यह नियम कब दिए गए? लैव्यव्यवस्था 7:38 बताता है कि "जब यहोवा ने सीनै पर्वत के पास के जंगल में ... आज्ञा दी कि इस्राएली मेरे लिये क्या क्या चढ़ावे चढ़ाएं।" प्रत्यक्ष रूप से, नियम निवास-स्थान के स्थापित होने के तुरंत बाद दिए गए, जब परमेश्वर ने चाहा कि उसके लोग वहाँ पर उसकी उपासना करें।[3] संभवतः ये नियम लैव्यव्यवस्था 8 और 9 में वर्णित याजकों के अभिषेक से पहले प्रकट किए गए।

इन्हें क्यों दिया गया? इन आज्ञाओं का उद्देश्य उन बलियों का, जिनका ये वर्णन करते हैं, परिचय या परिभाषा करवाना नहीं था। मनुष्य के साथ परमेश्वर के व्यवहार के आरंभ से ही विभिन्न बलियों का उल्लेख मिलता है। कैन और हाबिल अपने बलिदान परमेश्वर के सम्मुख लेकर आए (उत्पत्ति 4:1-16), नूह ने होमबलि के द्वारा परमेश्वर को धन्यवाद दिया (उत्पत्ति 8:20-22), और याकूब ने बालियाँ चढ़ाईं (उत्पत्ति 31:54; 46:1)। लैव्यव्यवस्था में नियमों के दिए जाने से पहले भी, बाइबल "होमबलियों" और "मेलबलियों" की बात कहती है (उत्पत्ति 8:20; 22:2; निर्गमन 10:25; 20:24; 24:5)। किसी "नए नियम" को देने के स्थान पर, लैव्यव्यवस्था के नियमों का उद्देश्य था निवास-स्थान में बलियों को नियंत्रित करना। संभवतः अधिक महत्वपूर्ण बात है कि इन नियमों के द्वारा इस्राएलियों को

निवास-स्थान में ही अपने बलिदान अर्पित करना अनिवार्य कर दिया गया। लैव्यव्यवस्था 7:38 स्पष्ट कहता है कि "यहोवा ने सीनै पर्वत के पास के जंगल में मूसा को आज्ञा दी कि इस्राएली मेरे लिये क्या क्या चढ़ावे चढ़ाएं।" जॉर्ज ए. एफ. नाईट ने कहा, "बाइबल की धारणा है कि बलि की माँग परमेश्वर ने स्वयं की है, क्योंकि बलि का परमेश्वर के अपने चरित्र से संबंध है।"[4]

ये नियम किन के लिए थे? प्रारंभिक काल से ही, लैव्यव्यवस्था को "याजकों के लिए निर्देश-पुस्तक" या "याजकों के लिए निर्देश-पुस्तिका" माना गया है।[5] यह प्रत्यक्ष प्रतीत होता है कि इन नियमों के प्राथमिक श्रोता वे याजक ही होंगे जिन पर निवास-स्थान में आराधना अर्पित करने का दायित्व था। इस्राएलियों को व्यक्तिगत रीति से इन नियमों को जानना था, इसलिए नियमों का प्रकरण उनके लिए था। क्लाईड एम. वुड्स ने इसी विचार को व्यक्त किया: "यद्यपि लैव्यव्यवस्था में दी गई बातें याजकों के लिए विशेषतः महत्वपूर्ण थी, किन्तु उन्हें प्रत्येक इस्राएली के लिए भी महत्वपूर्ण होना था, जिससे कि वे जान सकें कि जब वे कोई चढ़ावा लाएँ तो उन्हें क्या करना होगा।"[6] प्रत्यक्षतः याजकों का दायित्व था कि वे इन चढ़ावों से संबंधित परमेश्वर की विधियों को लोगों को सिखाएँ (10:11)।

नियमों के स्त्रोत के बारे में बताने के पश्चात, अध्याय 1 झुण्ड और गल्ले में से होमबलि चढ़ाने के विषय में निर्देश देता है। इसका समापन पक्षियों को होमबलि चढ़ाने के नियमों के साथ होता है।

नियमों का स्त्रोत (1:1, 2)

[1]यहोवा ने मूसा को बुलाकर मिलापवाले तम्बू में से उस से कहा, [2]"इस्राएलियों से कह, कि तुम में से यदि कोई मनुष्य यहोवा के लिये पशु का चढ़ावा चढ़ाए, तो उसका बलिपशु गाय-बैलों वा भेड़-बकरियों में से एक का हो।"

पुस्तक का आरंभ स्पष्ट कर देता है कि इससे आगे आने वाले नियमों का स्त्रोत स्वयं परमेश्वर ही है।

आयत 1. इब्रानी में, पुस्तक का आरंभ संयुक्ति "और" से होता है (KJV देखिए), जो इस बात का सूचक है कि यह वृत्तांत निर्गमन में पाए जाने वाले वृत्तांत से आगे का भाग है। फिर पहला पद समस्त पुस्तक के लिए यह कहने के द्वारा भाव निर्धारित कर देता है कि परमेश्वर ने **मूसा** से बात की और उससे लोगों से बात करने को कहा। बारंबार, लैव्यव्यवस्था यह विशेष उल्लेख करती है कि इस्राएल में जीवन और धर्म संचालन से संबंधित सभी नियमों का स्त्रोत परमेश्वर ही था, और परमेश्वर ने अपने नियम मूसा में होकर दिए।[7] जो लोग इस बात को अस्वीकार करते हैं कि लैव्यव्यवस्था के नियम परमेश्वर द्वारा मूसा को दिए गए प्रकाशन से आरंभ हुए वे इन स्पष्ट कथनों के सत्य का खंडन करते हैं।

परमेश्वर ने मूसा से **मिलापवाले तम्बू** में से बातें कीं, जो कि निवास-स्थान का एक और पदनाम है।[8] पारिभाषिक शब्द "निवास-स्थान" उसके ढाँचे को बतलाता

है: वह "तम्बू" था, एक अस्थायी संरचना। वाक्याँश "मिलापवाला तम्बू" उसके कार्य को संबोधित करता है: वह परमेश्वर के लोगों के मिलने का स्थान था (जैसे कि "पवित्र-महासभाओं" में), परन्तु साथ ही, और विशेषकर, वह स्थान जहाँ परमेश्वर अपने लोगों से मिलता था। इस संदर्भ में जो बल दिया गया है वह इस बात पर है कि निवास-स्थान वह स्थान था जहाँ परमेश्वर मूसा से मिलकर अपने वचन लोगों को पहुँचाने के लिए मूसा से कहता था।

आयत 2. इस आयत के निर्देश संकेत करते हैं कि यहोवा कोई नई प्रकार की धार्मिक क्रिया की चर्चा नहीं कर रहा था। उसने कहना आरंभ किया, **"तुम में से यदि कोई मनुष्य ... ।"** वह जानता थी कि वे चढ़ावे लेकर आएँगे; वह उन्हें केवल इतना बताना चाहता था कि उन्हें सही प्रकार से कैसे लाया जाए। वह उन्हें समझाएगा कि अपने चढ़ावे ऐसे कैसे लाएँ कि उनसे वह प्रसन्न हो। शब्द **चढ़ावा** इब्रानी शब्द קָרְבָּן *(कोर्बान)* का अनुवाद है, जिसका अर्थ होता है "वह जो परमेश्वर के निकट लाया जाए।" यह इस बात का संकेत दे सकता है "जिसे वेदी पर 'बलि' चढ़ाना है अथवा मात्र वह जिसे निवास-स्थान में प्रयोग करना है।"[9]

गाय बैलों में से होमबलि (1:3-9)

3"यदि वह गाय बैलों में से होमबलि करे, तो निर्दोष नर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर चढ़ाए, कि यहोवा उसे ग्रहण करे। 4और वह अपना हाथ होमबलि पशु के सिर पर रखे, और वह उसके लिये प्रायश्चित्त करने को ग्रहण किया जाएगा। 5तब वह उस बछड़े को यहोवा के सामने बलि करे; और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे लहू को समीप ले जा कर उस वेदी की चारों ओर छिड़कें जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है। 6फिर वह होमबलिपशु की खाल निकाल कर उस पशु को टुकड़े टुकड़े करे; 7तब हारून याजक के पुत्र वेदी पर आग रखें, और आग पर लकड़ी सजाकर धरें; 8और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे सिर और चरबी समेत पशु के टुकड़ों को उस लकड़ी पर जो वेदी की आग पर होगी सजाकर रखें; 9और वह उसकी अंतडिय़ों और पैरों को जल से धोए। तब याजक सब को वेदी पर जलाए, कि वह होमबलि यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे।"

पहली प्रकार की बलि जिसका वर्णन किया गया है वह "गाय बैलों में से होमबलि" है - अन्य शब्दों में उनके मवेशियों में से। यह खण्ड और वे जो इसके बाद आते हैं, "करने की विधि" के निर्देशों की एक सूची के समान पढ़े जाते हैं। इन निर्देशों का प्रथम भाग मुख्यतः उस व्यक्ति से संबंधित है जो चढ़ावे को लेकर आता है (1:3-6); और दूसरा, उन याजकों के लिए जो चढ़ावे को वेदी पर रखते थे (1:7-9)।

आयतें 3-6. एक **होमबलि** वह थी जो निवास-स्थान के सामने होमबलि की वेदी पर आग द्वारा जला दी जाती थी। इब्रानी में "होमबलि" के प्रयुक्त शब्द है עֹלָה *('ओला)*, जो यह दिखाता है कि "वह जो उठता या चढ़ता है।" इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि "पशु आग में पूरी रीति से जल जाता

था और धूएं में परमेश्वर की ओर चढ़ जाता था।"[10]

होमबलि के चढ़ाए जाने का उद्देश्य आयत 3 और 4 में बताया गया है। इस प्रकार का चढ़ावा स्वेच्छा से था, इसलिए निर्देशों का आरंभ यदि से होता है और कोई भी ऐसा शब्द प्रयुक्त नहीं होता है जिसका अभिप्राय "अनिवार्य" हो सकता है; यह स्वेच्छा से दिया जाने वाला चढ़ावा था। लेकिन फिर भी चढ़ावा चढ़ाने में उपासना करने वाले का उद्देश्य होता **कि यहोवा उसे ग्रहण करे** और वह बलि **उसके लिये प्रायश्चित्त करने को ग्रहण किया जाएगा**। "प्रायश्चित" इब्रानी शब्द כִּפֶּר *(किप्पर)*, के एक स्वरूप का अनुवाद है, सामान्यतः जिसका अर्थ होता है "ढाँप देना" (जैसे कि "पाप ढाँप देना")। परन्तु इस शब्द को "फिरौती" के अर्थ में देखना अधिक अच्छा होगा। इस से यह संकेत मिलता है कि पशु को एक फिरौती, या किसी के स्थान पर, या बलि देने वाले के स्थान पर दिया गया।[11] इस विचार को CEV का मुक्त अनुवाद, "मैं पशु को तुम्हारे पाप ले जाने के लिए बलि के रूप में स्वीकार कर लूँगा" अधिक भली प्रकार से रखता है।

गाय बैलों में से होमबलि का चढ़ावा लाने में सात कदम सम्मिलित थे, जिनमें से अधिकांश इस बात पर बल देते थे कि चढ़ावा लाने वाला व्यक्ति क्या करेगा।

पहला, उपासना करने वाले को **निर्दोष नर** को लाना था (1:3)। यहोवा को चढ़ाने के लिए जिस बैल को चुना जाए वह अच्छे हाल में होना चाहिए, बीमार या घायल पशु नहीं।

दूसरा, बैल को चढ़ावा चढ़ाने वाले को **मिलापवाले तम्बू के द्वार** पर लाकर प्रस्तुत करना था जिससे कि "यहोवा उसे ग्रहण करे" (1:3)। संभवतः विचार यह है कि उसे लाकर याजकों को प्रस्तुत किया जाना था, जो उसमें दोष ढूँढने के लिए उसका निरीक्षण करते; यदि उन्हें कोई दोष नहीं मिलता, तो वह ग्रहण किया जाता।

तीसरा, इस्राएली को **अपना हाथ होमबलिपशु के सर पर** रखना था, जिससे वह उसके स्थान पर "प्रायश्चित करने को ग्रहण किया जाए" (1:4)। लेख में उपासना करने वाले के द्वारा पशु के सर पर अपना हाथ रखने के महत्व को नहीं बताया गया है। प्रतीत होता है कि यह मनुष्य से पशु पर पापों के स्थानांतरण का चिन्ह था; तब पशु का बलि चढ़ाया जाना चढ़ाने वाले के पापों के लिए प्रायश्चित होता।

चौथा, उपासना करने वाला फिर पशु को **यहोवा के सामने** बलि करता (1:5)। दोबारा यह अभिव्यक्ति संभवतः सुझाव देती है कि पशु का बलि किया जाना विशिष्ट स्थान पर विशिष्ट रीति से किया जाता था, निःसंदेह निवास-स्थान की निकटता में उसके दरवाज़े पर।

पाँचवाँ, याजकों को होमबलि की वेदी पर बलि किए हुए बैल के **लहू को छिड़कना** था (1:5)।

छठवां, जो व्यक्ति होमबलि का चढ़ावा लेकर आया था वह फिर **होमबलिपशु की खाल निकालकर उस पशु को टुकड़े-टुकड़े करे** (1:6)। इसलिए बलि के लिए पशु की तैयारी - उसके मारे जाने, खाल उतारने, और बलि के पशु के टुकड़े करने

- का दायित्व उपासना करने वाले का था।

आयतें 7-9. सातवाँ और अंतिम कदम, गाए-बैलों में से चढ़ावा चढ़ाने के लिए, याजकों द्वारा वास्तविक बलि को चढ़ाना था। केवल उन्हीं को निवास-स्थान के सामने (और बाद में मंदिर में) चढ़ावे को वेदी पर रखने का अधिकार था।

याजकों को बैल के टुकड़े जलाने के लिए वेदी पर रखने होते थे। ऐसा करने के लिए उन्हें निश्चित करना होता था कि **वेदी पर आग रखें**, और फिर **आग पर लकड़ी सजाकर धरें** (1:7)। अन्त में उन्हें बलि के पशु के टुकड़ों को सजाकर रखना होता था - **सिर और चरबी**[12] **समेत पशु के टुकड़ों को उस लकड़ी पर** (1:8)। पशु के कई भाग, **उसकी अंतड़ियों और पैरों को जल से**, धोना होता था (शरीर का मल और गंदगी धोने के लिए) जिससे वे चढ़ावे के लिए उपयुक्त हो सकें (1:9)।

सब तैयार हो जाने के पश्चात, याजक को सब कुछ को वेदी पर **जलाए, कि वह होमबलि** ठहरे। इस प्रकार की बलि चढ़ाने के परिश्रम का परिणाम था कि वह चढ़ावा **यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे** (1:9)। यह विचार कि बलि "यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध"[13] उत्पन्न करती है, शेष पुस्तक में कई बार मिलती है। इससे यह सुझाव मिलता है कि बलि की आग की गंध परमेश्वर को भाती थी। (यह सत्य है, हम चाहे वेदी पर जलने वाले पशु से निकलने वाली गंध के विषय, जो भी विचार रखें।) अवश्य ही, भाषा मानवरूपी है, क्योंकि परमेश्वर को मनुष्य के गुण प्रदान करती है। इसका महत्व स्पष्ट है: ऐसे चढ़ावे परमेश्वर को प्रसन्न करते थे और उसके द्वारा ग्रहण किए जाते थे।[14]

भेड़ों या बकरों की होमबलि (1:10-13)

[10]"यदि वह भेड़ों वा बकरों का होमबलि चढ़ाए, तो निर्दोष नर को चढ़ाए। [11]और वह उसको यहोवा के आगे वेदी की उत्तरी ओर बलि करे; और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे उसके लहू को वेदी के चारों ओर छिड़कें। [12]और वह उसको टुकड़े टुकड़े करे, और सिर और चरबी को अलग करे, और याजक इन सब को उस लकड़ी पर सजाकर धरे जो वेदी की आग पर होगी; [13]और वह उसकी अंतड़ियों और पैरों को जल से धोए। और याजक सब को समीप ले जा कर वेदी पर जलाए, कि वह होमबलि और यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे।"

आयतें 10-13. भेड़ों व बकरों में से चढ़ाए गए बलि के लिए निर्देश बैल के चढ़ाए जाने के समान ही हैं। जो इस्राएली यह चढ़ावा चढ़ाता था उसे अपनी **भेड़** या **बकरियों** में से **निर्दोष नर** को चुनना था (1:10)। उसे उसको निर्धारित स्थान पर बलि करना था - **यहोवा के आगे वेदी की उत्तरी ओर** (1:11)। इस्राएली को पशु को **टुकड़ों** में **काटना** था, और फिर **याजक** को बलि किए हुए **पशु को वेदी पर सजाना** था (1:12)। **अंतड़ियों** और **पैरों** को **जल से धोना** था, जैसा बैल के साथ किया गया। तब याजक को उस सब को **वेदी पर जलाकर होमबलि चढ़ाना** था, जिससे वह **यहोवा के लिए सुखदायक सुगंधवाला हवन ठहरे** (1:13)।

पक्षियों की होमबलि (1:14-17)

[14]"यदि वह यहोवा के लिये पक्षियों की होमबलि चढ़ाए, तो पंडुकों या कबूतरों को चढ़ावा चढ़ाए। [15]याजक उसको वेदी के समीप ले जा कर उसका गला मरोड़ के सिर को धड़ से अलग करे, और वेदी पर जलाए; और उसका सारा लहू उस वेदी के बाजू पर गिराया जाए; [16]और वह उसकी गल-थैली को मल सहित निकाल कर वेदी की पूर्व की ओर राख डालने के स्थान पर फेंक दे; [17]और वह उसको पंखों के बीच से फाड़े, पर अलग अलग न करे। तब याजक उसको वेदी पर उस लकड़ी के ऊपर रखकर जो आग पर होगी जलाए, कि वह होमबलि और यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे।"

अध्याय का अन्त उन लोगों के लिए निर्देशों के साथ होता है जो अपने गाए-बैलों या भेड़-बकरियों पशुओं के स्थान पर "पक्षियों" को चढ़ाते हैं।

कोई अचरज कर सकता है कि, "कोई होमबलि के लिए पक्षियों को चढ़ाना क्यों चुनेगा?" यद्यपि यह खण्ड इसका उत्तर नहीं देता है, बाद में पाप बलि से संबंधित नियमों से (5:7,11) सुझाव मिलता है कि जो निर्धन थे परमेश्वर ने उनके लिए कम मूल्यवान चढ़ावों का प्रयोजन किया था। ऐसा प्रतीत होता है कि इन प्रयोजनों का उद्देश्य यह संभव करना था कि यदि कोई इस्राएली यहोवा के सामने होमबलि चढ़ाना चाहे, परन्तु बैल, या मेढ़ा न चढ़ा सके, तो वह उनके स्थान पर पक्षी चढ़ा दे।[15]

आयत 14. नियम निर्धारित करता है कि यदि कोई **पक्षी** चढ़ाना चाहे तो वह **पंडुक** या **कबूतर** ही चढ़ाए।[16] ऐसा चढ़ावा चढाने के लिए उपासना करने वाले को कितने पक्षी चढ़ाने थे यह नहीं बताया गया है। प्रत्यक्षतः, यदि वह केवल एक ही पक्षी देने में समर्थ है तो वह वही ला सकता था।

आयतें 15-17. अध्याय के पूर्व निर्देशों से ये निर्देश कुछ भिन्न हैं, क्योंकि उपासना करने वाला पक्षी अथवा पक्षियों को लाता था, और **याजक** बलि से संबंधित सभी कुछ करता था। उसे निर्देश थे कि वह **गला मरोड़ कर सर को धड़ से अलग करे** और **उसके लहू को वेदी के बाजू में** गिराए (1:15); उसकी **गल-थैली** (पक्षी की भोजन-नलिका की वह थैली के समान जगह जहाँ पर उसका भोजन जमा होता है) और **उसके पंखों** को हटाए (1:16); **उसके पंखों के बीच से फाड़े** परन्तु देह को दो भाग न करे; और फिर उसे **वेदी पर** जलाए ताकि वह **यहोवा के लिए सुखदायक सुगंधवाला हवन** ठहरे (1:17)।

लैव्यव्यवस्था 6:8-13 में यह कहना कि याजक होमबलि की राख को "छावनी से बाहर" किसी "शुद्ध स्थान" पर ले जाए, इन निर्देशों में जोड़ा गया है। अन्य चढ़ावों के असमान, याजकों को होमबलियों से कोई लाभ नहीं मिलता था (खाल के अतिरिक्त), क्योंकि वे वेदी पर भस्म हो जाती थीं।

होमबलि का महत्व

होमबलि परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण को दिखाती थी और उसकी ईश्वरीय आशीषों को प्राप्त करने के लिए आग्रह थी। होमबलियों से "प्रायश्चित" होता था (1:4), उपासना करने वाले के लिए; और, जब वे योग्य रीति से अर्पित की जाती थीं, तो उनका परिणाम "यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन" होता था (1:9, 13, 17)। वे परमेश्वर को प्रसन्न करती थीं और बलि चढ़ाने वाले के लिए परमेश्वर की स्वीकृति लाती थीं।

अन्य प्रकार के चढ़ावों का परिणाम भी दोनों प्रायश्चित और "यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन" होता था। परन्तु केवल होमबलि ही चढ़ाने वाले का यहोवा को संपूर्ण समर्पण का प्रतीक थी।

होमबलि यीशु द्वारा मसीहियों के लिए यहोवा को पूर्णतः समर्पित हो जाने की बुलाहट का पूर्वाग्रह था (मत्ती 6:33; 16:24; देखें रोमियों 12:1, 2)। यीशु कभी गुनगुने अनुयायियों से प्रसन्न नहीं रहे। वह हम से सब कुछ समर्पित कर देने के लिए कहते हैं, ऐसी भक्ति के साथ जो हमें जीवन भर ज्वलंत रखे।

लैव्यव्यवस्था और पुराने नियम में अन्य खण्ड होमबलि के प्रति हमारी समझ को बढ़ाती है। लैव्यव्यवस्था 22:17-19 में, इसे संकल्प संबंधी चढ़ावे (कोई मन्नत माँगने से संबंधित) तथा स्वेच्छाबलि साथ संबंधित किया गया है। गिनती 28 और 29 के निर्देशों की माँग है कि होमबलि प्रतिदिन याजकों के द्वारा दैनिक बलिदानों, सब्त के दिन, मासिक पर्वों, और सालाना पर्वों के साथ चढ़ाई जाएँ। होमबलि को कभी-कभी यहोवा से किए गए विशेष आग्रह के साथ भी जोड़ा गया (1 शमूएल 13:12; 2 शमूएल 24:21-25; भजन 66:13-20)।

अनुप्रयोग

होमबलि: "प्रभु, मैं कैसा कर रहा हूँ?" (अध्याय 1)

लैव्यव्यवस्था एक नमूना[17] मसीह के बहुमुखी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है। वह हमारा महायाजक है। वह बलिदान भी है जिसे लैव्यव्यवस्था के कई बलिदानों में पहले से निर्धारित किया गया था। लैव्यव्यवस्था के प्रत्येक बलिदान के तीन भाग हैं: (1) बलिदान चढ़ाने वाला: इस्राएली; (2) याजक: मध्यस्थ और अपने भाइयों के साथ प्रतिभागी; और (3) बलिदान।

लैव्यव्यवस्था में पाँच भिन्न-भिन्न प्रकार के बलिदान बताए गए हैं। इन बलिदानों में मसीह को उसकी अनेक रूपी भूमिकाओं में देखा जा सकता है।

वह बलिदान चढ़ाने वाला है (इब्रा. 5:5-9)। मसीह परमेश्वर की इच्छा को मनुष्य के रूप में पूरा करने आया। वह एक इस्राएली के समान व्यवस्था (मूसा की व्यवस्था) के अधीन बना रहा (गला. 4:4)। उसे एक इस्राएली के समान ही व्यवस्था की आवश्यकताएं पूरी करनी पड़ीं। इसमें केवल एक अन्तर यह था कि वह पापरहित था (इब्रा. 4:15)।

वह याजक है (इब्रा. 7:24, 25)। ये बलिदान हमारे प्रति उसके पद का चित्रण करते हैं और हमें यह दिखाते हैं कि वह किस प्रकार हमारे मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है। मसीह एक आधिकारिक और योग्य क्षमता में, मलिकिसिदक के क्रम के अनुसार खड़ा रहता है (इब्रा. 7:11), और वह अपने लोगों के लिए मध्यस्थता करने के लिए जीवित है।

वह बलिदान है (यूहन्ना 1:29)। हम मसीह के कार्य और चरित्र को एक वास्तविक बलिदान के रूप में देखते हैं। लहू के बलिदानों में, निर्दोष पशुओं और पक्षियों के उपयोग की सम्पूर्ण अवधारणा दोषी के लिए निर्दोष के मारे जाने का विचार था। यीशु मेमने के रूप में (यूहन्ना 1:29) निर्दोष, पापरहित (दोष रहित) था जिसे दोषी पक्ष, मनुष्य के लिए मार डाला गया (मत्ती 20:28; रोमियों 3:9-18, 23)।[18]

महत्व (1:2-4, 10, 14)। होमबलियाँ, बलिदानों में सबसे साधारण थीं। होमबलि का नूह के समान पितरों की पीढ़ी में एक इतिहास था (उत्पत्ति 8:20) और अब्राहम (उत्पत्ति 22:1-14)। लैव्यव्यवस्था यह संकेत देती है की निवासस्थान में कोई ऐसा दिन नहीं बीतता था इनमें से एक भी बलिदान नहीं चढ़ाया जाता हो (लैव्य. 6:9-12)।

साधारण बलिदान की प्रकृति को दो विशिष्टताओं में देखा जा सकता है। पहला, इसमें प्रायश्चित्त सम्मिलित था। जिस इब्रानी शब्द का "प्रायश्चित्त करना" 1:4 में अनुवाद किया गया है उसका अर्थ "तृप्त करना" है। यह बलिदान व्यवस्था के माध्यम से परमेश्वर की आवश्यकताओं को तृप्त करता था और बलिदान चढ़ाने वाले को परमेश्वर के सामने ग्रहण किए जाने की अनुमति देता था।[19]

दूसरा, एक "सुखदायक सुगंध" का वर्णन, इस बलिदान को लेकर किया गया है, जो कि महत्वपूर्ण है। वह प्रकृति या रूप जो बलिदानों ने अधिकांश में लिया उसने यह दर्शाया की बलिदानों के किस पहलू में परमेश्वर की विशेष रुचि थी। उदाहरण के लिए, पाप बलि, प्रायश्चित्त के दिन पर, फसह पर, और अन्य अवसरों पर, परमेश्वर का ध्यान लहू पर था। इस ईश्वरीय कथन में इस पर बल दिया गया है "मैं लहू को देखकर तुम्हें छोड़ जाऊँगा" (निर्गमन 12:13)। हालाँकि, उन बलिदानों के सम्बन्ध में जिन्हें जलाया जाता था, और उस धूप के सम्बन्ध में भी जिसे परम पवित्र स्थान में चढ़ाया जाता था, उसका ध्यान सुगंध पर था: परमेश्वर इस प्रकार के बलिदानों से प्रसन्न होता था।

मूल्य (1:2, 3, 10, 14)। परमेश्वर ने इस्राएलियों के मध्य कुछ सामाजिक और आर्थिक भिन्नताओं को प्रत्येक को उसके आर्थिक स्तर के अनुसार बलिदानों में भाग लेने के अनुमति देने के द्वारा मान्यता दी। हालाँकि, प्रत्येक इस्राएली, को कड़ी आवश्यकताओं को पूरा करना होता था जिसके निहित सिद्धांत उन्हें कुछ आवश्यक पाठ सिखाते थे।

पहले, बलिदान के पशु को उनके अपने गाय-बैलों या भेड़ों के झुण्ड में से होना था। उन्हें अपनी जीविका में से कुछ देना होता था जिसका उन्हें मूल्य चुकाना पड़ता था। उन्हें उस बलिदान को चढ़ाने की अनुमति तक नहीं थी जिसे उन्होंने शिकार

करके पकड़ा था।

दूसरा, इसे एक नर पशु होना था। नर पशु प्रजातियों में से बलशाली होते थे, फिर भी उन्हें आसानी से बलिदान किया जाता था क्योंकि मादाओं की आवश्यकता प्रजनन के लिए पड़ती थी।

तीसरा, बलिदान के लिए पशु को "शुद्ध" सूची में से होना पड़ता था। यह कोई ऐसा पशु नहीं हो सकता था जिसे इस्राएली स्वयं नहीं खाएंगे।

चौथा, इसे दोषरहित होना पड़ता था। हम बाद में मलाकी में देखते हैं कि परमेश्वर ने किस प्रकार अपने लोगों को उसे बीमार, लंगड़े, और अंधे पशुओं को बलिदानों के रूप में चढ़ाने के लिए डांटा था (मलाकी 1:6, 13, 14)।

इसी कारण, यहाँ पर, एक बलिदान व्यक्ति की स्वेच्छा से चढ़ाया जाता था क्योंकि आराधक परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता था और वह परमेश्वर को कुछ ऐसा देना चाहता था जिसका उसे व्यक्तिगत तौर पर दाम चुकाना होता - है कुछ ऐसा जो सबसे अच्छा और सबसे उत्तम था।

भागीदारी (1:4-6)। इस बलिदान में, किसी और बलिदान से बढ़कर आराधक स्वयं बलिदान चढ़ाने में अत्यधिक सम्मिलित होता था। उसे अपने हाथ बलिदान पशु के सिर पर रखने पड़ते थे, जो अन्य वचनों में समर्पण और प्रतिबद्धता का संकेत देता है। उसे पशु को याजक के द्वारा घात किए जाने की बजाए स्वयं घात करना पड़ता था। वह पशु की खाल उतार लेता था, परन्तु याजक को पशु की खाल को अपने पास रखने की अनुमति थी (7:8)। वही पशु को कई भागों में काटता था। केवल इसी क्षण याजक बलिदान में भाग लेता था। उसे आग तैयार रखनी होती थी, अंतड़ियों और टांगों को उस समय धोना होता था जब उन्हें आराधक के द्वारा उसके सामने प्रस्तुत किया जाता था, उसे वेदी के क्षेत्र में लहू का छिड़काव करना होता था, और टुकड़ों को आग पर रखना होता था।

शब्द में आराधक के द्वारा किए गए इन सभी कार्यों के महत्व के विषय में कोई टिप्पणी नहीं की गई है। हालाँकि, उसकी बलिदान में भागीदारी से हमें जो एक सबक लेना चाहिए वह यह है कि परमेश्वर की सदा से मांग थी कि आराधना एक भागीदारी का कार्य हो न कि एक निष्क्रिय कार्य।

सम्पूर्ण बलिदान (1:8, 9, 12, 13)। इस बलिदान की अंतिम विशिष्टता यह थी कि पूरा पशु अग्नि में भस्म हो जाता था। होमबलि न केवल सबसे साधारण बलिदान थी, बल्कि इसे प्रतिदिन चढ़ाना होता था; परन्तु इसे उस सीमा तक जलाना होता था कि बलिदान राख बन जाए। इसके बाद अगली सुबह राख को याजक के द्वारा बाहर उठाकर ले जाना होता था।

इसका महत्व कुछ अन्य बलिदानों की तुलना में देखा जा सकता है जिनमें याजक और आराधक दोनों को चढ़ाए जाने वाले माँस या भोजन में से एक भाग खाना पड़ता था। (देखें 6:16, 18, 26)। होमबलि, हालाँकि, भक्ति और समर्पण का बलिदान था और यह कि केवल यहोवा को इसके जलने मधुर सुगंध का आनंद मिलता था। इसी कारण, सम्पूर्ण बलिदान पूरी रीति से केवल परमेश्वर के द्वारा उपभोग किया जाता था।

यीशु मसीह, प्रतिरूप। इस बलिदान में यीशु मसीह का केंद्र - यद्यपि यह लहू, निर्दोषता, और एक जीवन के चढ़ाने का संकेत कर सकता है - यह उसकी सम्पूर्णता पर केन्द्रित है। हम पढ़ते हैं,

> इसी कारण वह जगत में आते समय कहता है, "बलिदान और भेंट तू ने न चाही, पर मेरे लिये एक *देह* तैयार की। होम-बलियों और पाप-बलियों से तू प्रसन्न नहीं हुआ। तब मैं ने कहा, 'देख, मैं आ गया हूँ, पवित्र-शास्त्र में मेरे विषय में लिखा हुआ है, ताकि हे परमेश्वर, तेरी इच्छा पूरी करूँ'।" ऊपर यह कहने के बाद, "बलिदान और भेंट तू ने न चाही, होमबलियों और पापबलियों से तू प्रसन्न नहीं हुआ" जिन्हें व्यवस्था के अनुसार चढ़ाया गया, इसके बाद उसने कहा, "देख, मैं आ गया हूँ, ताकि हे परमेश्वर, तेरी इच्छा पूरी करूँ।" वह दूसरे को स्थापित करने के लिए पहले को दूर कर देता है। इसके द्वारा हम यीशु की *देह* के बलिदान के माध्यम से एक बार सदा के लिए पवित्र किए गए हैं (इब्रा. 10:5-10; बल दिया गया है)।

यह वाक्यांश हमें यीशु के विषय में बहुत से "देह" के वाक्यांशों का स्मरण करवाता है जो नए नियम में पाए जाते हैं। हालाँकि, पौलुस ने, मसीह के बलिदान की सम्पूर्णता पर ध्यान केन्द्रित किया जब उसने यह कहा कि, "और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया, और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया" (इफि. 5:2)। मसीह का अपनी देह को चढ़ाने की सम्पूर्णता पिता को प्रसन्न करने वाली थी।

उपसंहार। क्या हम परमेश्वर को अपनी सम्पूर्णता चढ़ा रहे हैं? पौलुस ने रोम में मसीहियों को बताया: "इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि *अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र*, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ, यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है" (रोमियों 12:1, बल दिया गया है)। परमेश्वर के द्वारा हमारे लिए यीशु को पापबलि के रूप में चढ़ाने और हमारा स्वयं को परमेश्वर को समर्पण और सेवा के लिए चढ़ाने में अंतर है। व्यवस्था के अधीन एक आराधक की गतिविधि के समान ही, परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम उसकी सेवा के प्रति सक्रिय बने निष्क्रिय नहीं। लैव्यव्यवस्था से लिए गए उदाहरण हमारे जीवनों में इसे देखने में हमारी सहायता करें।

मैक्स टारबेट

समाप्ति नोट्स

[1]लैव्यव्यवस्था 7:37, 38, जो पुस्तक के इस भाग का सारांश है, छः प्रकार की बलियों को सूचीबद्ध करती है, और यहाँ "संस्कार बलि" को भी जोड़ देती है। (7:37, 38 पर टिप्पणियाँ देखिए।)
[2]संक्षेप में, सात अध्यायों के दो खण्ड, 1:1-6:7 और 6:8-7:36, उन्ही पाँच बलियों के साथ लगभग उस ही क्रम में व्यवहार करते हैं। आर. के. हैरिसन ने यह भिन्नता संकेत की: पहले में "पारंपरिक विधियों का वर्णन [इस्राएलियों] द्वारा चढ़ाए जाने के परिप्रेक्ष में दिया गया है," और दूसरे में "विवरण

उन भिन्न बलियों को लेता है, जैसे याजकों को उन से व्यवहार करना था" (आर. के. हैरिसन, *लैव्यव्यवस्था*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस [डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1980], 39)। [3]निवास-स्थान के स्थापित किए जाने भी पहले, इस्राएली पारेश्वर की उपासना बलियों के द्वारा कर रहे थे जिनमें लगभग उसी प्रकार की बालियाँ सम्मिलित थीं जिनके विषय परमेश्वर ने लैव्यव्यवस्था 1:1-6:7 में नियम दिए। [4]जॉर्ज ए. एफ. नाईट, लैव्यव्यवस्था, द डेली स्टडी बाइबल (फिलेडेल्फिया: वेस्टमिनिस्टर प्रेस, 1981), 12. [5]"प्रारंभिक यहूदी मत में, रब्बी कभी-कभी पुस्तक को *तोरा कोहानिम* (याजकों का तोरा) कहते थे" (जॉन एच. हेस, "लैव्यव्यवस्था," इन *हार्पर्स बाइबल कॉमेंटरी*, एड. जेम्स एल. मेयज [सैन फ्रांसिस्को: हार्पर एण्ड रो, 1988], 157)। [6]क्लाईड एम. वुड्स, *लेविटिकस - नम्बर्स - ड्यूट्रौनमी*, द लिविंग वे कॉमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेंट, वोल. 2 (श्रेवेपोर्ट, ला.: लैम्बर्ट बुक हाउस, 1974), 4. [7]उदाहरण के लिए देखिए, 4:1; 5:14; 6:1, 8, 19, 24; 7:22, 28, 38. लैव्यव्यवस्था के अंतिम सत्रह में से सोलह अध्याय इस कथन "यहोवा ने मूसा से कहा" के किसी-न-किसी रूप के साथ आरंभ होते हैं। [8]निर्गमन 40:2 "निवास-स्थान" की "मिलापवाले तम्बू" के साथ पहचान करवाता है (देखिए निर्गमन 40:22, 24, 29-32, 34, 35)। अभिव्यक्ति, "मिलापवाला तम्बू" एक अस्थायी तम्बू के लिए प्रयुक्त हुई है जिसे निवास-स्थान को बनाने से पहले खड़ा किया गया था और जो ऐसे स्थान का कार्य करता था जहाँ निवास-स्थान के पूरा बन जाने तक परमेश्वर मूसा से मिला करता था (निर्गमन 33:7-11)। "मिलापवाला तम्बू" की चर्चा कोय डी. रोपर, *निर्गमन*, ट्रुथ फ़ॉर टुडे कमेन्ट्री (सर्ची, आर्क.: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 2008), 543, में की गई है। [9]लियोनार्ड जे. कोप्पेस, "קָרַב," *थियोलौजिकल टेक्स्टबुक ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट*, एड. आर. लेअर्ड हैरिस, ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर, और ब्रूस के. वौल्टके (शिकागो: मूडी प्रेस, 1980), 2:813. इब्रानी शब्द *कोर्बान* जिसका यूनानी में लिप्यान्तरण हुआ है मरकुस 7:11 में पाया जाता है। वहाँ यीशु कह रहे थे कि यहूदी अगुवे अपने माता-पिता को सहायता देने के दायित्व से यह कहकर बचने के प्रयास कर रहे हैं कि वह जिससे वे अन्यथा उनकी देखभाल करते वह "कुर्बान" या "परमेश्वर को अर्पित" कर दिया गया है। ("कोर्बान" की व्याख्या सेलर्स एस. क्रेन, जूनियर, *मैथ्यू 14-28*, ट्रुथ फ़ॉर टुडे कमेन्ट्री [सर्ची, आर्क.: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 2011], 43, में की गई है।) [10]जेम्स ई. स्मिथ, *द पेंटाट्यूक*, 2एंड एड., ओल्ड टेस्टामेंट सर्वे सीरीज़ (जोपलिन, मो.: कॉलेज प्रेस पबलिशिंग को., 1993), 358. उसकी खाल के अतिरिक्त पशु का प्रत्येक भाग वेदी पर जल जाता था। उपासना करने वाले को पशु की खाल को उतरना होता था, और उसकी खाल फिर उस याजक की होती थी (7:8) जो चढ़ावे में सहायता कर रहा था।

[11]आर. लेयर्ड हैरिस ने कहा कि यह शब्द पुराने नियम में कभी यथार्थ में किसी ढाँपने वाली वस्तु के लिए प्रयुक्त नहीं हुआ और वे दावा करते हैं कि "यह अधिक भली इब्रानी व्याकरण होगी यदि इस क्रिया को उन्हीं शब्दों वाली संज्ञा כֹּפֶר *(कोपर)*, जिसका अर्थ 'एक फिरौती' है, से निकाला जाए (गिनती 35:31; यशा. 43:3)" (आर. लेयर्ड हैरिस, "*लैव्यव्यवस्था*", *द एक्स्पोजिटर्स बाइबल कॉमेन्ट्री*, वोल. 2, *जेनिसिस - नम्बर्स*, एड. फ्रैंक ई. गैबेलिन [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडर्वैन पबलिशिंग हाउस, 1990], 538)। [12]"चरबी" वह सख्त वसायुक्त भाग है जो गाए-बैलों और भेड़ों में गुर्दों के चारों ओर पाया जाता है। कुछ अनुवाद इसके लिए चरबी का प्रयोग करते हैं (KJV; NKJV; NIV; NJB; NLT)। [13]अन्य अनुवादों में "सुगंध" (KJV); "मधुर गंध" (NKJV); "यहोवा को भावती हुई गंध" (NIV); "मनोरम गंध वाला भोजन का चढ़ावा" (REB); "एक मधुर दान" (NAB); और "यहोवा को" भावती हुई गंध के लिए जलाया गया भोजन (NJB) आया है। [14]हैरिस ने कहा, "निश्चय ही यह मानवरूपी अभिव्यक्ति है जो बलि की गंध को चित्रित करती है ... कि बलि की स्वीकृति के लिए परमेश्वर द्वारा सूँघी गई" (हैरिस, 539)। एवेरेट फौक्स ने कहा, "इस अध्याय में बलि का कार्य ... परमेश्वर की कृपादृष्टि और अनुकंपा को प्राप्त करना है" (एवेरेट फौक्स, *द फाईव बुक्स ऑफ़ मोसेस*, द शोकेन बाइबल, वोल. 1 [न्यू यॉर्क: शोकेन बुक्स, 1995], 512)। [15]चढ़ावा चढ़ाने के लिए गाय-बैल या भेड़-बकरी में से लेने का तात्पर्य था कि व्यक्ति गाय-बैल, भेड़-बकरियों का स्वामी था, और इससे यह भी अभिप्राय निकलता है कि वह ज़मींदार था। जो न तो गाय-बैल

और न भेड़-बकरी रखते थे वे होमबलि कैसे चढ़ाते? वे बैल या मेढ़ा क्रय कर सकते थे; या, यदि वे पशु क्रय करने की सामर्थ्य नहीं रखते थे तो वे पंडुक या कबूतर क्रय कर सकते थे। हैरिसन ने लिखा, "इस्राएल में ऐसे लोग भी होते थे जो मूल्यवान पशु की बलि देने की सामर्थ्य नहीं रखते थे, चाहे उनके पास वह होता भी। ऐसे निर्धन लोगों के लिए व्यवस्था पक्षी का प्रावधान करती थी ..." (हैरिसन, 47-48). [16]अन्य, या और बहुतेरे पक्षी अशुद्ध माने गए थे (देखें 11:13-19)। [17]एक प्रकार एक प्रतिरूप के अनुरूप होता है जिस प्रकार एक पैटर्न एक वस्त्र के साथ करता है: पैटर्न पूरे वस्त्र की परछाई होता है। हालाँकि, जिस प्रकार वस्त्र इसके पैटर्न से बड़ा है, इसलिए यीशु मसीह (प्रतिरूप) के माध्यम से हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर के नए नियम की योजना पुराने नियम की बलिदान प्रणाली (नमूना) की तुलना में "बेहतर" है। (देखें इब्रा. 7:22; 8:6; 10:1.) [18]एंड्रू ज्यूक्स, *द लॉ ऑफ़ द ओफ्फरिंग्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगेल पब्लिकेशन्स, एन.डी.), 44-45. [19]सेप्टुआजिंट और वल्गेट के पास 1:4 के प्रायश्चित के संदर्भ में वाक्यांश "स्वीकार किया जाना" है। (पूर्वोक्त., 58-59.)